आर्थिक विकास को प्रभावित करने वाले घटक या तत्व
(FACTORS AFFECTING THE ECONOMIC DEVELOPMENT)

आर्थिक विकास का सार राष्ट्रीय उत्पादन की वृद्धि या प्रति व्यक्ति वास्तविक आय की वृद्धि में निहित है। विकास की प्रक्रिया अत्यधिक जटिल होती है। उस पर विभिन्न 'आर्थिक' व 'अनार्थिक' तत्वों का प्रभाव पड़ता है। आर्थिक विकास

1 **आर्थिक समीक्षा,** 2008-09
2 **उपरोक्त।**

Scanned with CamScanner

को प्रभावित करने वाले आर्थिक तत्व हैं—प्राकृतिक साधन, मानवीय साधन, पूँजी, उद्यम, तकनीक आदि। इसके विपरीत, सामाजिक संस्थायें, सांस्कृतिक मान्यताएँ, नैतिक मूल्य, संस्थागत एवं राजनीतिक दशाएँ आदि विकास को प्रभावित करने वाले अनार्थिक तत्व हैं। विकास को प्रभावित करने वाले दूसरे तत्वों को, 'प्राथमिक तत्व' तथा 'अनुपूरक तत्व' कहा जाता है। आर्थिक विकास को आधार प्रदान करने वाले तथा विकास प्रक्रिया को प्रारम्भ करने वाले तत्व ही 'प्रधान चालक' या 'प्राथमिक तत्व' कहलाते हैं। ये तत्व हैं प्राकृतिक साधन, मानवीय साधन, कौशल निर्माण, सामाजिक संस्थाएँ तथा सांस्कृतिक मूल्य। दूसरी ओर, 'विकास-प्रक्रिया को गति प्रदान करने वाले तत्व ही 'अनुपूरक' या 'सहायक तत्व' कहलाते हैं। ये तत्व हैं—जनसंख्या की वृद्धि दर, तकनीकी विकास की दर तथा पूँजी निर्माण की दर। आर्थिक विकास के प्राथमिक और सहायक, आर्थिक और अनार्थिक निर्धारकों का संक्षिप्त विवेचन निम्न प्रकार है—

(अ) आर्थिक घटक या तत्व (Economic Factors)

(1) **प्राकृतिक साधन**—प्राकृतिक साधनों में भूमि, खनिज पदार्थ, वन, नदियाँ, झरने, जलवायु और वर्षा, समुद्री तट, भौगोलिक स्थिति आदि का समावेश किया जाता है। आर्थिक विकास को सीमित या प्रोत्साहित करने में किसी देश के प्राकृतिक साधनों की निर्णायक भूमिका होती है। जिस देश में संसाधन जितने अधिक होंगे, वह देश उन संसाधनों का अधिक-से-अधिक दोहन करके अपना विकास करने में सक्षम है किन्तु कुछ विद्वानों का तर्क है कि आधुनिक युग में प्राकृतिक संसाधनों का अब अधिक महत्व नहीं रह गया है। उनका मत है कि प्राकृतिक साधनों की न्यूनता होने पर भी जापान की गणना विश्व के सर्वाधिक विकसित देशों में की जाती है क्योंकि जापान सीमित साधनों के नये उपयोग खोजने में सफल हुआ है। स्पष्टतया आर्थिक विकास के लिए प्राकृतिक साधनों की बहुलता ही आवश्यक नहीं है अपितु अधिक आवश्यक यह है कि उन्नत तकनीक द्वारा उनका उपयुक्त विदोहन किया जाये, ताकि साधनों की बर्बादी न्यूनतम हो और उनका उपयोग लम्बे समय तक चल सके। अल्पविकसित देशों में पिछड़ी हुई तकनीक के कारण अधिकांश साधन अप्रयुक्त या अल्पप्रयुक्त रहते हैं। **गिल महोदय** का भी कहना है कि "जनसंख्या बढ़ सकती है, उपकरणों, मशीनों तथा फैक्ट्रियों का निर्माण किया जा सकता है, किन्तु हमें प्रकृति द्वारा दिए गए प्राकृतिक उपहार (साधन) सदैव के लिए सीमित एवं निश्चित होते हैं।"

(2) **मानवीय साधन**—आर्थिक विकास पर किसी देश की जनसंख्या के आकार, उसकी रचना, वृद्धि दर, व्यावसायिक वितरण और कार्यक्षमता का भी महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। जहाँ विकसित देशों में जनसंख्या की वृद्धि उत्पादन के विस्तार हेतु आवश्यक मात्रा में श्रम करने में, उत्पादित माल की माँग पैदा करके बाजार का विस्तार करने में तथा पूँजी के निर्माण में सहयोग प्रदान करती है; वहाँ अल्पविकसित देशों में तेजी से बढ़ती हुई जनसंख्या उनके द्रुत आर्थिक विकास में मुख्य बाधा बनी हुई है। यदि सुधरी हुई तकनीक और पूँजी निर्माण के फलस्वरूप उत्पादन में कुछ वृद्धि होती भी है तो वह बढ़ती हुई जनसंख्या के उदर में चली जाती है। फलतः अर्थव्यवस्था की वास्तविक विकास दर में कोई वृद्धि नहीं होती। पूँजी की न्यूनता के कारण पूँजीगत साज-सज्जा में सुधार की सम्भावना (जो श्रम की उत्पादकता बढ़ाने के लिए आवश्यक है) समाप्त हो जाती है; बेरोजगारी बढ़ती है तथा रहन-सहन का स्तर निम्न होने लगता है। विकासोन्मुख देशों में आर्थिक विकास हेतु मानवीय साधन का सही ढंग से उपयोग करने के लिए निम्नांकित उपाय किये जाने चाहिए—

(i) परिवार नियोजन कार्यक्रम के माध्यम से जन्म-दर को नियन्त्रित किया जाना चाहिए।

(ii) धार्मिक, सांस्कृतिक, संस्थागत और सामाजिक तत्वों में परिवर्तन द्वारा श्रम शक्ति के दृष्टिकोण को परिवर्तित किया जाना चाहिए, ताकि श्रम की उत्पादकता और गतिशीलता बढ़े तथा व्यक्ति 'श्रम' की गरिमा को स्वीकार करने लगें (शिक्षा के प्रसार द्वारा श्रमिकों का दृष्टिकोण परिवर्तित किया जा सकता है।)।

(iii) मानवीय पूँजी का निर्माण किया जाये अर्थात् देश के समस्त निवासियों के ज्ञान, कौशल और क्षमताओं में वृद्धि लाने वाली प्रक्रिया शुरू की जाये। इसके लिए स्वास्थ्य, शिक्षा और दूसरी सामाजिक सेवाओं में विनियोग करना आवश्यक है।

(3) **पूँजी-निर्माण**—'पूँजी' आर्थिक विकास को प्रभावित करने वाला प्रमुख आर्थिक तत्व है। पूँजी का आशय है—उत्पादन के भौतिक पुनरुत्पादनीय साधनों का स्टॉक। **प्रो. रैगनर नर्कसे** के अनुसार, **"पूँजी निर्माण का अर्थ यह है कि समाज अपने समस्त चालू कार्य व्यापार को तात्कालिक उपभोग की इच्छाओं और आवश्यकताओं की पूर्ति में नहीं जुटाता; अपितु इसका एक भाग पूँजीगत पदार्थों अर्थात् उपकरण और यन्त्र, मशीनरी तथा परिवहन सुविधायें, संयन्त्र और साज-सज्जा के निर्माण की ओर निर्देशित करता है।"** सरल शब्दों में, 'पूँजी निर्माण' पूँजीगत पदार्थों में विनियोग करना है जो पूँजीगत स्टॉक, राष्ट्रीय उत्पादन और आय में वृद्धि को जन्म देता है।

पूँजीगत पदार्थों में किया गया विनियोग केवल राष्ट्रीय उत्पादन में ही वृद्धि नहीं करता अपितु रोजगार अवसरों में भी वृद्धि करता है। पूँजी का निर्माण तकनीकी विकास को जन्म देता है तथा तकनीकी प्रगति विशिष्टीकरण एवं बड़े पैमाने के

Scanned with CamScanner

उत्पादन की बाह्य मितव्ययितायें उत्पन्न करती है। पूँजी का निर्माण बढ़ती हुई श्रम शक्ति के लिए मशीनरी, उपकरण और यन्त्र आदि जुटाने में भी सहायक होता है। **एक विकासशील देश में परिवहन, शक्ति, शिक्षा, अनुसन्धान आदि सामाजिक-आर्थिक ऊर्ध्वस्थों की स्थापना भी पूँजी निर्माण द्वारा ही सम्भव है।** पूँजी का निर्माण प्राकृतिक संसाधनों का विदोहन, औद्योगीकरण और बाजार का विस्तार सम्भव बनाता है। इस प्रकार, पूँजी का निर्माण अनेक ढंग से आर्थिक प्रगति में सहायक होता है।

(4) **पूँजी-निपज अनुपात**—'पूँजी-निपज अनुपात' से आशय पूँजी की उन इकाइयों से है जो उत्पादन (निपज) की एक इकाई प्राप्त करने के लिए आवश्यक होती हैं। विकास-दर में वृद्धि केवल संचित पूँजी की राशि पर ही निर्भर नहीं करती, अपितु पूँजी-उत्पादन अनुपात पर भी निर्भर करती है। पूँजी-निर्माण से अधिकाधिक लाभ प्राप्त करने के लिए तकनीकी एवं संगठनात्मक प्रगति द्वारा पूँजी-निपज अनुपात को निरन्तर बनाये रखना आवश्यक होता है। पूँजी उत्पाद अनुपात (अथवा पूँजी की उत्पादकता) अनेक तत्वों पर निर्भर करता है; जैसे—पूँजी निवेश से युक्त तकनीकी विकास की मात्रा, नवीन उपकरणों को प्रयुक्त करने की कुशलता, प्रबन्धकीय एवं संगठनात्मक योग्यता, विनियोग के प्रकार, आर्थिक ऊर्ध्वस्थों का उपयोग तथा उनकी व्यापकता। सामान्य अल्पविकसित देशों में पूँजी की उत्पादकता कम होती है।

(5) **उद्यमशीलता**—उद्यमशीलता आर्थिक विकास के प्रमुख तत्वों में से एक है। उद्यमशीलता का अभाव विकासशील देशों की एक प्रमुख समस्या है। उद्यमी का पहला कार्य व्यावसायिक उपक्रम का संगठन और प्रबन्ध करना है। उद्यमी का दूसरा कार्य व्यावसायिक जोखिम एवं अनिश्चितता वहन करना है। **शुम्पीटर** ने 'नव प्रवर्तन' को उद्यमी का सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य बताया है। उद्यमी में विशिष्ट योग्यतायें होती हैं जो उसे नई वस्तुओं का उत्पादन शुरू करने, नई तकनीक अपनाने तथा नये बाजार की खोज करने के लिए प्रेरित करती हैं। **रिचार्ड टी. गिल** के शब्दों में, **"आविष्कार अथवा तकनीकी ज्ञान आर्थिक दृष्टि से तभी उपयोगी हो सकता है, जब उसे नव-प्रवर्तन के रूप में प्रयुक्त किया जाये तथा उसकी पहल उद्यमी वर्ग द्वारा की जाए।"**

(6) **तकनीकी परिवर्तन**—'तकनीक' का अभिप्राय कार्यों के लिए विभिन्न साधनों के मिश्रण से है। तकनीकी परिवर्तन उत्पादन पद्धतियों में परिवर्तन से सम्बन्धित होते हैं जो किसी नई तकनीक, अनुसन्धान या नव प्रवर्तन का परिणाम होते हैं। **रिचार्ड टी. गिल** के मतानुसार, "किसी देश में तकनीकी परिवर्तन हेतु चार तत्वों की उपस्थिति आवश्यक है—वैज्ञानिक अभिरुचि, शिक्षा का ऊँचा स्तर, नव प्रवर्तनों को व्यावहारिक रूप देना तथा उद्यमशीलता। तकनीकी प्रगति के फलस्वरूप श्रम, पूँजी तथा अन्य उत्पादन-साधनों की उत्पादकता बढ़ती है तथा कुछ नई वस्तुओं का उत्पादन सम्भव होता है। **मैसन** के मतानुसार, तकनीकी प्रगति कच्चे पदार्थों के क्षेत्र में अनेक लाभों को जन्म देकर विकास प्रक्रिया को त्वरित बनाती है—(i) यह अज्ञात साधनों की खोज को सुविधाजनक बनाती है। (ii) यह खनिज पदार्थों का खनन कार्य मितव्ययी बनाती है। (iii) यह कच्चे माल की परिनिर्माण-लागत घटाती है। तकनीकी परिवर्तन अन्य क्षेत्रों में भी उत्पादन बढ़ाने और लागत घटाने में सहायक होते हैं।" प्रो. **गिल** ने चार तत्वों का होना आवश्यक बताया है—(i) विज्ञान की प्रगति या वैज्ञानिक अभिरुचि, (ii) समाज में शिक्षा का ऊँचा स्तर, (iii) नव-प्रवर्तनों को व्यावहारिक रूप देना तथा (iv) उद्यमशीलता।

(7) **श्रम विभाजन और उत्पादन स्तर**—विशिष्टीकरण श्रम विभाजन श्रम की उत्पादकता में वृद्धि लाता है तथा बड़े पैमाने के उत्पादन की बचतों को जन्म देता है। श्रम विभाजन बाजार के आकार पर निर्भर करता है तथा बाजार का आकार आर्थिक प्रगति पर निर्भर करता है। उत्पादन का स्तर (पैमाना) बड़ा हो जाने पर विशिष्टीकरण एवं श्रम विभाजन को प्रोत्साहन मिलता है। परिणामतः उत्पादन बढ़ता है और आर्थिक प्रगति की दर गतिवान हो जाती है।

(8) **वित्तीय स्थिरता**—देश का आर्थिक विकास उसकी वित्तीय स्थिति से भी निकट से सम्बद्ध है। यदि देश में मुद्रा प्रसार तथा ब्याज की दर सीमित है तो देश का आर्थिक विकास निर्धारित गति से होता रहता है किन्तु इसकी विपरीत दशा में देश का आर्थिक विकास अवरुद्ध हो जाता है।

(ब) अनार्थिक घटक (Non-economic Factors)

आर्थिक विकास के निर्धारक तत्वों में अनार्थिक घटकों की भूमिका भी महत्वपूर्ण होती है। अनार्थिक घटक निम्नांकित हैं—

(1) **सांस्कृतिक अभिरुचियाँ**—अल्पविकसित देशों में धार्मिक और सांस्कृतिक परम्पराएँ (जैसे— जनसाधारण का भाग्यवादी दृष्टिकोण, सामाजिक-धार्मिक उत्सवों पर अपव्ययता, धार्मिक अन्धविश्वास आदि) आर्थिक विकास के मार्ग में बाधक सिद्ध होती हैं। ये परम्पराएँ सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक संस्थाओं को पिछड़ी हुई दशा में बनाये रखती हैं। आर्थिक विकास हेतु इन सांस्कृतिक एवं धार्मिक परम्पराओं में परिवर्तन आवश्यक होता है लेकिन यह परिवर्तन धीरे-धीरे तथा शिक्षा, प्रदर्शन एवं प्रोत्साहन द्वारा लाया जाना चाहिए। **प्रो. गैलब्रिथ** के शब्दों में, **"लौकिक शिक्षा न केवल कुछ ही, अपितु बहुतों**

Scanned with CamScanner

की योग्यताओं को बन्धन-मुक्त कर देती है तथा यह तकनीकी ज्ञान के लिए मार्ग खोल देती है। नई विधियों और नई तकनीकों के प्रति लौकिक शिक्षा मनुष्यों के मस्तिष्कों को खोल देती है, जो किसी अन्य उपाय द्वारा असम्भव है।"[1]

(2) **सामाजिक मूल्य और संस्थाएँ**—अल्पविकसित देशों में प्रचलित सामाजिक मूल्य और सामाजिक संस्थाएँ (संयुक्त परिवार, जाति-प्रथा, छुआछूत, पर्दा प्रथा, नातेदारी सम्बन्ध, सामाजिक रीति-रिवाज, उत्तराधिकार के नियम आदि) आर्थिक विकास में अवरोध उपस्थित करती हैं। आर्थिक प्रगति के लिए यह आवश्यक है कि शिक्षा और ज्ञान के प्रसार द्वारा सामाजिक मूल्यों, अभिरुचियों और संस्थाओं में परिवर्तन लाया जाये। साथ ही ऐसी संस्थाओं की स्थापना भी आवश्यक है जिनके द्वारा बचतों को उत्पादक-पूँजी में परिवर्तित करने के लिए गतिशील बनाया जाये। प्रशासकों, इंजीनियरों, प्रबन्धकों, वैज्ञानिकों तथा दूसरे तकनीकी विशेषज्ञों की न्यूनता को पूरा करने के लिए ऐसी संस्थायें स्थापित की जानी चाहिए, जो इन व्यक्तियों के शिक्षण एवं प्रशिक्षण में सहायक हो सकें। **मेयर** एवं **बॉल्डविन** के अनुसार, "आर्थिक विकास के लिए मनोवैज्ञानिक व सामाजिक आवश्यकताओं का होना उसी प्रकार जरूरी है जिस प्रकार आर्थिक आवश्यकताओं का।"

(3) **राजनैतिक और प्रशासनिक परिवर्तन**—अल्पविकसित देशों का कमजोर प्रशासकीय एवं राजनैतिक ढाँचा उनके विकास मार्ग में बहुत बड़ा अवरोध है। आर्थिक विकास के लिए सुदृढ़, दक्ष एवं ईमानदार प्रशासन की आवश्यकता होती है। **लुईस** के शब्दों में, **"आर्थिक क्रियाओं को प्रोत्साहित या हतोत्साहित करने में सरकार का व्यवहार महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। कोई भी देश सुयोग्य सरकार से सकारात्मक प्रोत्साहन के बिना प्रगति नहीं कर पाया है।"**[2] शान्ति, स्थिरता और कानूनी संरक्षण उद्यमशीलता को प्रोत्साहित करता है। एक सुयोग्य सरकार उपयुक्त मौद्रिक एवं राजकोषीय नीतियाँ अपनाकर पूँजी निर्माण में सहायक हो सकती है। शासन में जितनी अधिक स्थिरता होगी, विकास की दीर्घकालीन योजनायें उतनी ही अधिक कुशलता और सफलता के साथ कार्यान्वित की जा सकेंगी। देश में सुरक्षा और शान्ति होने पर विदेशी पूँजी भी आकर्षित होगी।

(4) **अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितियाँ**—अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितियाँ भी एक देश के आर्थिक विकास को प्रभावित करती हैं। यदि पड़ौसी राष्ट्रों से देश के सम्बन्ध मधुर हैं और अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितियाँ तनाव से मुक्त हैं तो अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार को प्रोत्साहन मिलेगा जो आर्थिक विकास में सहयोगी सिद्ध होगा। यदि स्थितियाँ विपरीत होंगी तो देश का आर्थिक विकास अवरुद्ध हो जायेगा।

उपर्युक्त विवेचन से यह निष्कर्ष निकलता है कि 'आर्थिक तत्व' अनार्थिक तत्वों के साथ मिलकर आर्थिक विकास को प्रभावित करते हैं। अतः आर्थिक विकास में अनार्थिक तत्वों का भी बहुत अधिक महत्व होता है। **नर्कसे** के शब्दों में, **"आर्थिक विकास का मानवीय गुणों, सामाजिक अभिरुचियों, राजनीतिक परिस्थितियों और ऐतिहासिक संयोगों से निकटवर्ती सम्बन्ध होता है। प्रगति के लिए पूँजी आवश्यक तो है परन्तु यह एकमात्र निर्धारक नहीं है।" प्रो. काल्डोर** के मतानुसार, **"प्रावैगिक आर्थिक विकास का अध्ययन, आर्थिक तत्वों के विश्लेषण के अतिरिक्त, इन तत्वों के मनोवैज्ञानिक एवं समाजशास्त्रीय निर्धारकों के अध्ययन की ओर अग्रसर होता है।"**[3] आर्थिक विकास की प्रक्रिया में इन सभी निर्धारक तत्वों का अपना एक विशेष स्थान है, इसलिए उनके सापेक्षिक योगदान तथा महत्व के बारे में कुछ भी कहना न तो सम्भव ही है और न ही तर्कपूर्ण।

सन्तुलित एवं असन्तुलित विकास

Scanned with CamScanner